Golden Research Thoughts
Vol -2 , ISSUE –6, Dec 2012
ISSN:- 2231-5063
Available online at www.aygrt.isrj.in

ORIGINAL ARTICLE

वीमा नाटक में दलित चेतना

कानडे राजाराम दादा

एस.एस.जी.एम.कॉलेज, कोपरगांव , जि. अहमदनगर,

प्रस्तावना

दलित साहित्य अन्य साहित्य स्त्रोत से पृथक तथा मौलिक है क्योंकि, अंबेडकरी चेतना ही दलित साहित्य की चेतना है। अर्थात दलित साहित्य का प्रेरणा स्त्रोत डॉ.बी.आर.अंबेडकर जी के ही विचार है। अत: वह एक ऐसा प्रकाश पुंज है जो अंधेरे में उतरा है। यह विलास तथा मनोरंजन का साहित्य नही है। बल्कि दलितों की जरुरतों या आवश्यकताओं का साहित्य है। यह साहित्य डॉ.बी.आर.अंबेडकर जी के अथक योगदान तथा संघर्ष को आगे बढाने वाली क्रांतिकारी चेतना है जो दबे कुचले गये, ब्राह्मण्यवादी व्यवस्था में नित्य पीडित हुए सामाजिक न्याय, समता, स्वातंत्र्य, बंधुता या भाईचारा से वंचित समाज की आह से उभरा है। दलित साहित्य की जितनी भी परिभाषाएँ मौजुद हैं उनका एकही स्वर प्रमुखता से मुखरित होता है और वह है, सामाजिक परिवर्तन की चाहत।

सामाजिक परिवर्तन केवल कानुनी तौर पर संभव नहीं, उसके लिए अथक संघर्ष तथा संगठन की आवश्यकता है। मनुष्य तथा उसकी मनुष्यता को ही महत्त्व देने वाला संघठन अनिवार्य हैं। मानव अस्मिता ही दलित अस्मिता है और उसके लिए शिक्षा संघर्ष एवं संगठन तथा वैज्ञानिक सोच की पुकार की आवश्यकता है जो दलित साहित्य की बुनियाद है। विमा शीर्षक दलित नाटक में अभिव्यक्त दलित चेतना अंबेडकरी विचार का सार है क्योंकि दलित नाटककार रत्नकुमार सांभरिया ने अंबेडकर जी के शिक्षा -संघर्ष एवं संगठन के इस मूलमंत्र को केंद्र में रखकर प्रस्तुत नाटक की रचना की है जिसमें विकलांगों के जीवन संघर्ष को अंकित किया है। वैसे विकलांग के जीवन पर बहुत कम लिखा गया है और नाटक विधा तो कही नजर नही आती। एक नेत्रहीन युवती जिसका नाम विमा है और नेत्रहीन पुरुष जिसका नाम जमन वर्मा है जो दलित युवक है। दोनों की, दुरावस्था, प्रेम की पवित्रता तथा आत्मसमर्पण, बुद्धि चातुर्य पाठक पर अमीट प्रभाव करता है।

जमन वर्मा की आयु २५ साल की है और वीमा २३ साल की सवर्ण युवती है। इत्तिफाक से दोनों एक दुसरे से मिल जाते है। जमन की वीरता, पवित्रता, स्पष्टता एवं संवेदनशीलता, आत्मनिर्भरता-दरियादिल व्यक्तित्त्व की ओर वीमा आकृष्ट होती हैं। दोनों शरीर से भिन्न परंतु दिल तथा विचारो में एक प्रतीत होते है। शुरूआती दौर में सारे सवर्ण जमन वर्मा के प्रति मानवता बरसाते हैं। जैसे ही जातिभेद का प्रश्न निर्माण होता है। वैसे ही सारे सवर्ण एक होकर उनकी सुहावनी जिंदगी में तबाही मचाने का काम करते हैं। सवर्ण जातिअभिमान को प्रस्तुत करने में किस तरह अमानवीयता प्रदर्शित करते है ? इसका सजीव दस्तावेज प्रस्तुत नाटक है। इस नाटक में अभिव्यक्त दलित चेतना और उसकी सुंदरता निम्नांकित मुद्दो में प्रस्तुत करने का प्रयास किया हैं।

१) अंतर्जातिय विवाह :-

आज की सारी समस्याओं की जड भारतीय हिंदू समाज व्यवस्था है और दलित के लिए दलितत्त्व को दूर रखने की कोशिश में अंतर्जातिय विवाह की आवश्यकता प्रतीत होती है। "हमारा समाज एक सीढीनुमा समाज है। जिसमें हर जाति से बडी तथा हर जाति से छोटी जाति का अस्तित्त्व विद्यमान है। यह सिर्फ उँची व नीची जाति का विभाजन नहीं है। बल्कि निम्न जाति को भी आपस में बाँटा गया है। यह जातिप्रथा अंदर तक अपनी जड जमा चुकी है। इसकी जडों को हिलना संभव है। परंतु जडों से उखाडना असंभव है।"१. आधुनिक युग के राजनीतिज्ञों ने जाति व्यवस्था को अधिक पनाह देकर समाज व्यवस्था अधिक संकीर्ण की है।

डॉ.बी.आर.अंबेडकर जी ने जाति निर्मूलन के लिए अंतर्जातिय विवाह पर जोर दिया है। इस बात को सम्मुख रखते हुए नाटककार ने जातिनिर्मूलन हेतु सवर्ण लडकी विमा और दलित युवक जमन वर्मा के प्रेमविवाह को चित्रित करके पाठक को जाति भेद की समस्या तथा उसके निर्मूलन के प्रति सतर्क किया है। विकलांग जमन वर्मा तथा वीमा केवल शरीर से पृथक है। दोनों के विचार एक जैसे है जो दलित साहित्य चेतना सौंदर्य का विशेष पहलु है।

२) दलित नायक का बुद्धिबल :-

'वीमा' शीर्षक नाटक का नायक दलित युवक जमन वर्मा है जो जन्मांध है और वह 'वीमा' नामक युवती से बेहद प्यार करता है। उसकी बुद्धि कुशलता साहस, संवेदनशीलता, कर्मठ या कर्तव्यतत्परता आदि के कारण वीमा उसकी ओर अत्यधिक आकृष्ट हो जाती है। अनैतिक, नाजायज, संबंध से बचने के लिए वह 'वीमा' से विश्वास देता है। दोनों के विवाहसंबंधी सपने पूर्ण हो जाते है। वह श्यामाजी, आका, बाज दैनिक समाचार के संवाददाता 'झा' के भ्रष्टाचार को प्रस्तुत करने हेतु हडताल के आयोजन में अपनी बुद्धि प्रामाण्यवाद की झाँकी प्रस्तुत करता है। उसका हौसला दलितों में अस्मिता जगाता है। उसने सामाजिक यथार्थ को इन शब्दों में व्यक्त किया है, "ये बडे लोग भीतर से बडे कायर होते है ये हम गरीब लोगों के कंधों पर ही बंदूक रखकर चलाना जानते है, सामना नहीं कर पाते है।"२. इसलिए सवर्णों ने दलितों में डर कायम रखने का नित्य प्रयास किया है। ताकी उन्हें दलितों का शोषन करने में आसानी हो सके । जमन वर्मा की चतुरता या होशियारी नई पीढी के लिए प्रेरक है।

३. आत्मसजगता, दृढता में सौंदर्य :-

सजगता, दृढता के साथ ही संघर्षरत हो जाना दलित साहित्य चेतना का एक पहलु है। दलितों को ठगाने का प्रयास हर युग में हो गया है। अत: उसे हरपल सजग रहना अनिवार्य है। मीठी बोली बोलनेवाले लोगों की ठगाने की पद्धतियाँ बदल गई है। जनतंत्र के प्रभावस्वरुप आया यह परिवर्तन के प्रति सतर्कता बरतना आवश्यक हो गया है। हिंदू समाज के महत्त्वपूर्ण किरदारों मे प्रतिष्ठित व्यक्ति - आका, विकलांग कल्याण के अलमबरदार श्यामाजी, थानेदार तथा लोकप्रिय समाचार पत्र का संवाददाता 'झा' ये सारे उच्च शिक्षित सम्मानित व्यक्ति विकलांग दम्पति जमन तथा वीमा को केवल जातिभेद के नाम पर पीडित करते है। उन्हें एक दूसरे से अलग करके जमन को अपनी जाति की किसी दूसरी लडकी से शादी करने का सूझाव देते है। जैसे "जो श्यामाजी ने कहा, वही आका जी ने कहा। दो शरीर, एक सुर। यानी वीमा को भूल जाओ... तुम्हारी जात बिरादरी की किसी विकलांग लडकी के साथ तुम्हारा विवाह करा देंगे ।"३. जमन अपनी खोई हुई पत्नी को प्राप्त करने हेतु समाज के प्रतिष्ठित जिम्मेदार व्यक्तियों के सामने गिडगिडाता रहा, अनुरोध करता रहा, परंतु उन्होंने उसकी नासुनी करके अपना जातिअभिमान व्यक्त करके टालमटोल करने का प्रयास किया है। इतना ही नहीं जमन का दमन करने के लिए समाचार पत्र के संवाददाता की ओर से झूठी खबर छापवाने का प्रयास भी होता है फिर भी जमन ने अपने दोस्त 'देवत ' की सहायता से हडताल में सफलता प्राप्त की। उसका ये प्रयास अनुपम रहा है। अर्थात यह चेतना सौंदर्य अनुपम प्रतीत होता है।

४) प्रेम की सर्वोपरिता :-

सवर्ण परिवार की लडकी 'वीमा' है जो परिवार से पीडित होकर शहर आ जाती है और उसे गुंडों की चपेटमें से छुडाने का प्रयास जमन करता है। यहाँ दोनों की भेंट होती है। अर्थात दोनों में परिचय होकर प्रेमांकुर पल्लवित हो जाता है। साथ ही वे दोनों सुंदर सपना देखते हैं। वे दोनों एक दूसरे के सपने को सुनने में उत्सुक होते हैं. लेकिन उसका जिक्र नहीं करते हैं परंतु दोनों की बहस में सपने का अर्थ अभिव्यक्त होता है। जैसे-जमन का यह कहना काफी सार्थक प्रतीत होता है," सपने वे नहीं होते जो नींद में आते हैं, सपने वो होते हैं, जो सोने नहीं देते। एक सपने ने मुझे सोने नहीं दिया।"४ यहाँ प्रेम की सर्वोपरिता स्पष्ट होती है जो चेतना सौंदर्य का एक अनुभाग है।

५) भाषाशैली में सौंदर्य चेतना.

नाटककार ने भाषाशैली के माध्यम से प्रकाश, ध्वनि संकेत, प्रतीक और मंच सज्जा में प्रयुक्त उपकरणों को प्रस्तुत किया है, जो अनुपम है। पात्रों की पृष्ठभूमि व सामाजिक स्थिति के अनुरूप संवादों में आँचलिकता प्रयुक्त है। शहरी भाषा से हटकर किया गया आँचलिक शब्दों और मुहावरों का प्रयोग 'वीमा' को सर्वसामान्य दर्शक और समाज के दबे -कुचले शोषित वर्ग के साथ जोडता है। इससे

यह स्पष्ट होता है कि 'वीमा' एक अनूठी नाटयरचना है। प्रस्तुत नाटक में प्रयुक्त मुहावरें कहावतें उदाहरण स्वरुप इसप्रकार है। - "हम तो हुक्म के दुग्गे है' 'मियां -बीवी राजी तो क्या करेगा काजी,' 'जहाँ चाह, वहाँ राह', 'टस से मस मत होना' आदि है। साथ ही कुछ मौलिक वाक्यांश, पूर्वदीप्ति शैली प्रस्तुत है जो अनुपम है।

६) शीर्षक की सार्थकता में मौलिकता या सुंदरता-

'वीमा' यह शब्द 'वी' और 'मा' से बना है। 'वी' का अर्थ है जाना तथा उत्पन्न होना है और 'मा' का संबंध मातृत्व से है। जिसमें पवित्रता या शूचिता देखी जाती है। पुत्र कुपुत्र हो सकता है परंतु माता कभी कुमाता नहीं हो सकती इस बात का बोध 'वीमा' नामक व्यक्ति चित्रण में होता है ।' सारे मौलिक विचार वीमा के चरित्रांकन में प्रस्तुत है। 'वीमा' यह शीर्षक संक्षिप्त, बोधगम्य, जिज्ञासापूर्ण एवं सौंदर्य चेतना को पल्लवित करने वाला है। विकलांग होने के बावजूद वीमा अनेक कठिन बाधाओं को दूर करती है और मानवता का भाव पाठक के दिल दीमाग में संचारित करती है। जो दलित साहित्य का एक महत्त्वपूर्ण प्रयोजन है।

७) संगठन की सौंदर्य चेतना :-

परिवर्तन सृष्टि का नियम है अर्थात सृष्टि परिवर्तन करने में शक्तिशाली है परंतु उसे सही दिशा देने में उन्नति या तरक्कि निहित होती है। इस दृष्टि से दलित साहित्य महत्त्वपूर्ण योग दे रहा है। दलित साहित्य ना केवल साहित्य है बल्कि वह एक क्रांतिकारी आंदोलन है. जिसमें वर्णव्यवस्था , जाति व्यवस्था के प्रति विद्रोह, नकार है और विज्ञान का स्वीकार है, दैववाद, अवतारवाद पूजा पाठ का परित्याग है। जमन जब उँची तथा नीची जात का जिक्र करता है। तब वीमा का यह कहना काफी सार्थक लगता है, "तुम मरद हो, मैं औरत हूँ।" दो जात। तुम नेत्रहीन, मैं नेत्रहीन -एक जात।"५ यह जाति की मौलिक परिभाषा व्यक्ती की चेतना जगाती है।

जमन जब अपनी लापता करवाया पत्नी - 'वीमा' को सवर्णों की चंगुल से प्राप्त करने हेतु हडताल करता है, तब नाटक में चित्रित सारे सवर्ण, भ्रष्टाचारी हक्काबक्का रह जाते हैं। क्योंकि जमन को पुरा सहयोग विकलांग समाज की ओर से प्राप्त होता है साथ ही उसका दलित दोस्त देवत उसका हौसला बढाता है उसके विकलांग को लेकर जो हँसते, मजाक करते थे वे अचंबित हो जाते हैं। क्योंकि संगठन की शक्ति अनुपम होती है। इस बात की ओर नाटककार ने पाठक का ध्यान आकृष्ट किया है।

निष्कर्ष :-

इसतरह मानवी सौंदर्य के प्रतिमान शाश्वत नहीं रहते बल्कि बदलते रहते है। बदलने की चाहत में बुद्धि कौशल का प्रमाण देना पडता है। किसी समय में गोरा रंग सौंदर्य का प्रतीक भले ही रहा हो, परंतु आज इतना महत्त्वपूर्ण नहीं जितना ज्ञान अथवा बुद्धि प्रामाण्यवाद है। यही कारण है कि आज विश्व सुंदरियाँ रंग के आधार पर नहीं बल्कि बौद्धिक क्षमता या कसौटियों के आधार पर चुनी जा रही हैं। यही नियम पुरुष के लिए भी है। इसी परिप्रेक्ष्य मे 'वीमा' शीर्षक नाटक में अभिव्यक्त सौंदर्य चेतना अनुपम है। इसमें कोई संदेह नहीं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

१) डॉ.जोगेंद्रकुमार संधु -दलित चेतना के संदर्भ में कथाकार ओमप्रकाश वाल्मीकि पृ.१२
२) रत्नकुमार सांभरिया -'वीमा' पृ.७५
३) वही पृ.६०
४) वही पृ.४२
५) वही पृ.४५